बाल व्यक्तित्व के विकास पर स्कूल का प्रभाव

*पूजा चौधरी

अपने जीवन के शुरुआती कुछ वर्षों में बच्चे अपने माता-पिता के साथ रहते हैं। आप उनके शिक्षक, मार्गदर्शक, प्रशिक्षक और देखभालकर्ता के रूप में कार्य करते हैं। आपका एकमात्र उद्देश्य अपने बच्चों में आवश्यक कौशल विकसित करना है। जल्द ही, जब आपका बच्चा चलना और बोलना शुरू कर दे, तो आप उसे स्कूल भेज दें। वहां उनके व्यक्तित्व में बदलाव आता है। कभी-कभी कोई बच्चा काफी देर तक बोलना शुरू नहीं करता है। ऐसी स्थिति में डॉक्टर बच्चों को स्कूल में दाखिला दिलाने की सलाह देते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि स्कूल उन्हें बढ़ने और खुद को बेहतर बनाने का माहौल देता है। यहां कई अन्य तरीके दिए गए हैं जिनसे स्कूल बच्चों के व्यक्तित्व विकास में काम करते हैं। उनमें से कुछ हैं:

उन्हें शैक्षणिक क्षमता प्रदान करें

प्रत्येक स्कूल का प्राथमिक लक्ष्य अपने बच्चों को शैक्षणिक रूप से मजबूत बनाना है। आप सोच सकते हैं कि शैक्षणिक क्षमता इस बात का उत्तर नहीं है कि बच्चों के व्यक्तित्व का विकास कैसे किया जाए? आप आंशिक रूप से सच हैं। शैक्षणिक ज्ञान केवल यह सुनिश्चित करता है कि आपका बच्चा अपने आस-पास की चीज़ों के बारे में जानता है। यह ज्ञान उनमें एक निश्चित स्तर का आत्मविश्वास लाता है। लेकिन व्यक्तित्व पर वास्तविक प्रभाव इस उत्कृष्टता को हासिल करने के तरीकों से आता है। जब आपके बच्चे को एक पैराग्राफ या अनुभाग पढ़ने के लिए बुलाया जाता है, तो वे बिना किसी हिचकिचाहट के बोलने का कौशल सीखते हैं। जब आपका बच्चा परीक्षा में अच्छा स्कोर करता है, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। जब आपके बच्चे को किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए बुलाया जाता है, तो वह गलत होने के डर से उबर जाता है और उसकी प्रतिक्रिया विकसित होती है। जब कोई शिक्षक आपके बच्चे को लेख या कविता लिखने के लिए बुलाता है, तो उनके लेखन कौशल में सुधार होता है। इन सभी चीजों का प्रभाव आपके बच्चों पर पड़ता है। जब उनके गणित शिक्षक उन्हें बोर्ड पर आने और एक प्रश्न हल करने के लिए कहते हैं, तो वे समस्या-समाधान का कौशल सीखते हैं।

उन्हें सीखने का माहौल प्रदान करें

जब बच्चे पैदा होते हैं तो उनका दिमाग कोरी स्लेट की तरह होता है। समय के साथ, वे अपने माता-पिता, परिवार के सदस्यों, समाज, दोस्तों आदि से चीजें हासिल करते हैं। इन सभी घटकों का आपके बच्चे पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसी तरह, स्कूल में उनकी बातचीत उनके बीच एक नया कौशल सेट लाती है।

आपने देखा होगा कि यदि आपके आस-पास के लोग फैशन उद्योग से जुड़े हैं, तो आपमें स्वचालित रूप से इसमें रुचि बढ़ेगी। जल्द ही आपका फैशन सेंस विकसित हो सकता है। इसी तरह, जब बच्चे स्कूल में होते हैं, तो उन्हें एक ऐसा माहौल मिलता है, जहां हर बच्चे की अपनी रुचि होती है। आपके बच्चे उस व्यक्ति के साथ बंधन में बंधते हैं जो उनकी रुचि के स्तर में फिट बैठता है। इस प्रकार, उस क्षेत्र के बारे में उनकी समझ और ज्ञान विकसित होता है। साथ ही, स्कूल में, बच्चों के सामाजिक कौशल (बच्चों में व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा) विकसित होते हैं। जब वे अपने सहपाठियों के साथ बातचीत करते हैं, तो वे बुनियादी शिष्टाचार सीखते हैं। जब वे एक समूह परियोजना पूरी करते हैं, तो वे सहयोग सीखते हैं। जब वे अपना टिफ़िन एक साथ खाते हैं, तो वे बाँटना सीखते हैं। जब वे अपने दोस्तों से बात करते हैं, तो उनकी शब्दावली और प्रवाह विकसित होता है। ये सब बच्चे के व्यक्तित्व के विकास पर स्कूल का प्रभाव है।

यह चरित्र विकास सुनिश्चित करता है

चरित्र बच्चों के व्यक्तित्व विकास का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। जब आप दुनिया के साथ बातचीत करते हैं तो चरित्र में आपके कार्य और शब्द शामिल होते हैं। यह अक्सर कहा जाता है कि किसी व्यक्ति का असली चरित्र तब प्रतिबिंबित होता है जब वह किसी प्रतिकूल परिस्थिति का सामना करता है। स्कूलों में बच्चों को ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। वे अपने दोस्तों और शिक्षकों के चरित्र का भी निरीक्षण करते हैं। कभी-कभी, वे अपनी प्रेरणा चुन सकते हैं और उनके जैसा बनने का प्रयास कर सकते हैं। अधिकांश शिक्षक जब कोई विशेष विषय पढ़ाते हैं तो कहानियाँ सुनाते हैं। ये कहानियाँ बच्चों में नैतिक मूल्यों का संचार करती हैं। जब बच्चे किसी दूसरे का पेन लेते हैं और उसे लौटाते समय धन्यवाद कहते हैं तो उनमें दूसरों के प्रति कृतज्ञता का भाव विकसित होता है। जब वे सुबह की सभाएँ करते हैं, तो कभी-कभी भगवान को याद करते हैं, जिससे उनमें प्रेम की भावना विकसित होती है। जब बच्चे कक्षा में प्रवेश करने या छोड़ने से पहले अनुमति मांगते हैं, तो वे सहमति के मूल्य को समझते हैं। जब वे किसी प्रतियोगिता में भाग लेते हैं और जीतते हैं, तो वे छोटी-छोटी चीज़ों में ख़ुशी ढूँढ़ना सीख जाते हैं। यदि वे हार जाते हैं लेकिन फिर भी अपने दोस्तों से ढेर सारी सराहना बटोरते हैं, तो वे छोटी-छोटी बातों पर दुखी न होना और सराहना का आनंद लेना सीखते हैं। ये सभी क्षण आपके बच्चे के व्यक्तित्व को आकार देते हैं।

यह उन्हें सही शारीरिक मुद्रा देता है

अपने बच्चों के अच्छे व्यक्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए केवल मानसिक विकास ही पर्याप्त नहीं है। शारीरिक मुद्रा का आपके बच्चे के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इंटरव्यू में इंटरव्यूअर का मुख्य फोकस कैंडिडेट की बॉडी लैंग्वेज पर होता है। वे आसानी से एक आत्मविश्वासी और घबराए हुए उम्मीदवार के बीच अंतर पहचान लेते हैं। कई गतिविधियाँ बच्चों को बेहतर शारीरिक मुद्रा पाने में मदद करती हैं। खेल खेलना उनमें से एक है। स्कूलों में, उन्हें क्रिकेट, खो-खो, बैडमिंटन आदि जैसे विभिन्न खेलों का पता लगाने का अवसर मिलता है। ये खेल बच्चों के शारीरिक आसन पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। तो ये बच्चे के व्यक्तित्व के विकास पर स्कूल के कुछ प्रभाव हैं।

शैक्षणिक क्षमता में सुधार करें

दक्षिण कोलकाता के अधिकांश सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में, बच्चों की शैक्षणिक क्षमता को उसकी चरम सीमा तक विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। स्कूल समस्या-समाधान, तर्कसंगतता और समाधान विकसित करने में कड़ी मेहनत करते हैं बच्चों में समाधान खोजने का कौशल। इससे न केवल शैक्षणिक क्षमता में सुधार होता है बल्कि बच्चे के व्यक्तित्व में भी सुधार होता है। इसके अलावा, स्कूल ज्ञान स्वीकार्यता कौशल विकसित करने के लिए इंटरैक्टिव सत्रों के माध्यम से बच्चों को शामिल करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

सकारात्मक चरित्र निर्माण में सहायता करता है

स्कूलों को बच्चों को अच्छे अंक दिलाने के साथ-साथ उनमें अच्छा व्यवहार विकसित करने में भी मदद करनी होगी। बच्चे के भीतर सामान्य व्यवहार विकसित करना स्कूल का कर्तव्य है। इस प्रकार, शैक्षणिक मदद के अलावा, शिक्षक बच्चों को शिष्टाचार, सम्मान, सहानुभूति, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा सिखाने पर भी ध्यान केंद्रित करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी स्कूल में प्रश्न पूछने के लिए हाथ उठाना एक उपयुक्त व्यवहार है। बच्चों को शुरू से ही यही सिखाया जाता है.

सामाजिक कौशल का विकास

स्कूलों का प्राथमिक ध्यान सामाजिक कौशल विकसित करने पर भी है। शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने से कोई बच्चा अच्छा इंसान नहीं बन जाता। इस प्रकार, स्कूलों में शिक्षक बच्चों के सामाजिक संपर्क कौशल को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उन्हें शर्म, आशंका, भय और भय से छुटकारा पाने के तरीके सिखाए जाते हैं। इससे बच्चे को बाहरी दुनिया के साथ बातचीत करने के लिए तैयार करने में मदद मिलती है। स्कूल के भीतर एक उत्साहजनक और समझदार माहौल एक बच्चे को खिलने और तेजी से बड़ा होने में मदद करता है।

बच्चों को उनके व्यक्तित्व लक्षण विकसित करने में मदद करने के लिए, स्कूलों और शिक्षकों को सकारात्मक सीखने की संस्कृति विकसित करनी चाहिए। बच्चे संवेदनशील होते हैं इसलिए उनके साथ सख्ती बरतने से समस्या का समाधान नहीं होता। पुरूषोत्तम भागचंदका एकेडमिक स्कूल वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता का प्रतीक रहा है। हम अपने छात्रों को सर्वोत्तम गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने और संपूर्ण व्यक्तित्व विकास सुनिश्चित करने पर केंद्रित हैं।

एक बच्चे के व्यक्तित्व विकास पर स्कूल का प्रभाव

आपके बच्चों की शिक्षा उन्हें बहुत आकार देती है। उनका भविष्य स्कूल में मिलने वाले परिवेश और प्रदर्शन से सीधे प्रभावित होता है। वे व्यक्तियों के एक समूह के साथ जुड़ने, विभिन्न सेटिंग्स में समायोजित होने आदि की क्षमता हासिल करते हैं। परिणामस्वरूप, स्कूल का बच्चे के व्यक्तित्व विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव

पड़ता है।

महामारी और ऑनलाइन कार्यक्रमों के कारण अधिकांश बच्चों में उन क्षमताओं का अभाव है जो वे केवल कक्षाओं में ही सीख सकते हैं। हालाँकि, इंटरनेट शिक्षा-तकनीकी प्लेटफार्मों की बदौलत चीजें अब आसान हो गई हैं। अब, बच्चे घर बैठे भी इसी तरह का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, आप अपने बच्चों द्वारा अर्जित ज्ञान और योग्यताओं को भी देख सकते हैं।

बच्चे अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में अपने माता-पिता के साथ रहते हैं। आप उनके गुरु, प्रशिक्षक, देखभालकर्ता और शिक्षक के रूप में कार्य करते हैं। आपका मुख्य लक्ष्य अपने बच्चों को मूलभूत क्षमताएँ सिखाना है। आप अपने बच्चे को तब ही स्कूल भेजें जब वह चलने और बोलने में सक्षम हो जाए। उस समय उनका व्यक्तित्व बदल जाता है।

कभी-कभी बच्चे को बोलना शुरू करने में थोड़ा समय लगता है। ऐसे मामलों में, डॉक्टर माता-पिता को अपने बच्चों को स्कूल में दाखिला दिलाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ऐसा इसलिए है ताकि वे स्कूल द्वारा प्रदान की जाने वाली सेटिंग में सीख सकें और विकास कर सकें। यहां कुछ अतिरिक्त तरीके दिए गए हैं जिनसे स्कूल बच्चों को उनके व्यक्तित्व के विकास में सहायता करते हैं। उनमें से कुछ प्रमुख हैं:

- **शैक्षणिक क्षमता के साथ सुविधा प्रदान करता है**

प्रत्येक स्कूल का मुख्य उद्देश्य अपने छात्रों के शैक्षणिक कौशल का विकास करना है। आप यह मान सकते हैं कि बौद्धिक योग्यता बच्चों को उनके व्यक्तित्व के विकास में मदद करने की कुंजी नहीं है। आप आंशिक रूप से ही सही हैं. केवल अकादमिक शिक्षा ही यह गारंटी दे सकती है कि आपका बच्चा अपने परिवेश से अवगत है। इस जानकारी के परिणामस्वरूप वे उनमें अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं। लेकिन यह प्रतिभा कैसे प्राप्त की जाती है इसका व्यक्तित्व पर वास्तविक प्रभाव पड़ता है।

जब आपके बच्चे से कोई पंक्ति या अनुच्छेद पढ़ने के लिए कहा जाता है तो वह बिना रुके बोलने की क्षमता विकसित कर लेता है। जब आपके बच्चे परीक्षणों में अच्छा प्रदर्शन करते हैं तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। जब आप अपने बच्चे से किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए कहते हैं, तो वे गलत उत्तर देने की चिंता से उबर जाते हैं और उनकी प्रतिक्रिया में सुधार होता है। जब कोई शिक्षक आपके बच्चे से कोई कविता या लेख लिखने के लिए कहता है, तो उनकी लेखन क्षमताएँ आगे बढ़ती हैं। ये कारक आपके बच्चों को प्रभावित करते हैं। वे समस्याओं को हल करने की क्षमता तब हासिल करते हैं जब उनके गणित शिक्षक उन्हें इसमें शामिल होने और किसी मुद्दे पर काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

- **सीखने का माहौल प्रदान करता है**

जब बच्चे पैदा होते हैं तो उनका दिमाग खाली कैनवास की तरह होता है। वे पूरे समय अपने माता-पिता, रिश्तेदारों, समाज, दोस्तों आदि से सामान जमा करते हैं। आपका बच्चा इनमें से प्रत्येक कारक से गहराई से

प्रभावित होता है। इसी तरह, स्कूल में उनकी बातचीत से उन्हें नए कौशल सेट विकसित करने में मदद मिलती है।

आप पाएंगे कि यदि आपके आस-पास के लोग फैशन क्षेत्र से जुड़े हैं, तो इसमें आपकी रुचि भी बढ़ेगी। आपकी शैली की समझ जल्द ही विकसित हो सकती है। इसके समान, स्कूल एक ऐसा माहौल प्रदान करते हैं जहां प्रत्येक छात्र अपनी रुचि के क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है। आपके बच्चे उन लोगों के साथ संबंध बनाते हैं जो उनकी रुचियों को साझा करते हैं। परिणामस्वरूप, उन्हें उस विषय का ज्ञान और समझ प्राप्त होती है।

इसके अतिरिक्त, सामाजिक कौशल - बच्चे के व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण घटक - स्कूल में विकसित होता है। जब वे अपने सहपाठियों के साथ जुड़ते हैं तो उन्हें शिष्टाचार की बुनियादी समझ हासिल होती है।

***सहायक आचार्य**
ना.दे.वर्मा महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
भीलवाड़ा (राज.)

सन्दर्भ: -

1. पुरूषोत्तम भागचंदका एकेडमिक स्कूल ब्लॉग / व्यवस्थापक द्वारा / 12/23/2021
2. जानवी खेतान https:// therealschool.in/blog/impact-school-development-child-personality-all-need-know
3. मैरीगोल्ड इंटरनेशनल स्कूल ब्लॉग / व्यवस्थापक द्वारा